© 2017 IJSRST | Volume 3 | Issue 7 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X
Themed Section: Science and Technology

मुगलकाल में मुद्रा–प्रणाली का विकास

परवीन जहाँ
जे.आर.एफ. शोध–छात्रा
मध्यकालीन एवं आधुनिक इतिहास विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

मुगलकालीन मुद्रा–प्रणाली अत्यन्त सुव्यवस्थित थी। 15वीं शताब्दी के प्रारम्भ में शाहरुख तैमूरी वंश का प्रसिद्ध शासक हुआ। उसके द्वारा 'शाहरुख' नामक एक सिक्का निकाला गया जो मध्य एशिया और ईरान में प्रचलित था। इसी आधार पर जहीरुद्दीन मोहम्मद बाबर ने काबुल से चाँदी का एक सिक्का चलाया। उसने 'बाबरी' नामक एक सिक्का कांधार से प्रचलित किया। चाँदी और ताँबे के सिक्के उसने आगरा की टकसाल से 1529 ई0 में निकाला। बाबर के चाँदी के सिक्कों पर सीधी ओर कलमा और चारों खलीफाओं का नाम तथा दूसरी ओर बाबर की उपाधि–अल सुल्तान अल आजम वा अल खाकान अल मुकर्रम जहीरुद्दीन मुहम्मद बाबर बादशाह गांजी अंकित था। ऐसा कहा जाता है कि बाबर और हुमायूँ ने प्राचीन मुद्रा–प्रणाली को ही जारी रखा और उसी के आधार पर अपने नाम के सिक्के चलाये। हुमायूँ के सिक्के बाबर के सिक्कों की भाँति थे। उसके सिक्कों पर बाबर की सभी पदवियाँ अंकित थीं, केवल मुहम्मद 'बाबर बादशाह गाजी' के स्थान पर 'मुहम्मद हुमायूँ बादशाह गाजी' उत्कीर्ण था। दूसरी बार 1555 ई0 में सिंहासन पर आसीन होने के समय शेरशाह द्वारा चलाये गये मुद्रा का ही प्रसारण था। हुमायूँ ने शेरशाह की मुद्रा–प्रणाली का ही अनुसरण कर लिया था। शेरशाह ने इस मुद्रा–प्रणाली में सुधार किया। भारतीय मुद्राओं के इतिहास में शेरशाह का शासनकाल एक परीक्षण का काल कहा गया है। इतिहासकार बी0ए0 स्मिथ लिखते हैं कि ''शेरशाह को ऐसी सुधरी हुई मुद्रा–पद्धति को स्थापित करने का सम्मान प्राप्त है जो मुगलकाल में चलती रही और ईस्ट इण्डिया कम्पनी के समय में 1835 ई0 तक बनी रही तथा जो वर्तमान ब्रिटिश मुद्रा का आधार है। उसने मिली जुली धातुओं के सिक्कों के स्थान पर केवल शुद्ध सोना, चाँदी एवं ताँबे के सिक्कों प्रचलित किए जिनका तौल एवं आकार निश्चित रहता था। उसने शुद्ध चाँदी के करीब 180 दाने (ग्रेन) का सिक्का चलाया जो रुपया कहलाता था।[प] इस प्रकार प्रायः सभी अरबी अक्षरों के अतिरिक्त नागरी अक्षरों में भी सुल्तान का नाम अंकित रहता था। उसके कुछ सिक्कों पर सुल्तान के अतिरिक्त इस्लाम के प्रथम चार खलीफाओं का नाम भी अंकित था।[पप] उसने ताँबे का सिक्का भी चलाया, जिसे पैसा कहते थे। उसने रुपयों के आधे, चौथाई, आठवें और सोलहवें भाग के भी सिक्के चलाये। शेरशाह ने सोने के सिक्के भी चलाये लेकिन उनकी संख्या बहुत कम है।[पपप] शेरशाह ने साम्राज्य के विभिन्न भागों में शाही टकसाल स्थापित किये, जहाँ से सिक्के जारी किये जाते थे। उसके सिक्कों से यह स्पष्ट होता है कि उसने विजित प्रदेशों को कितनी शीघ्रता से अपने अधीन किया। अपनी सैनिक विजयों के

पश्चात् ही उसने भूमि व्यवस्था, मार्गों का निर्माण तथा शाही टकसालों की स्थापना की।[पअ] उसने एक ऐसी मुद्रा–प्रणाली की स्थापना का प्रयास किया जो खोट रहित थी। चाँदी के रुपये के अतिरिक्त शुद्ध सोने व चाँदी के सिक्के चलाने में भी शेरशाह ने सराहनीय प्रयास किये। मुद्रा–टंकन के इतिहास में शेरशाह का महत्वपूर्ण स्थान है।

मुगल सिक्कों के विकास में अकबर ने विशिष्ट भूमिका का निर्वहन किया। शासक के प्रारम्भिक वर्ष में उसने सूरी सिक्कों के आधार पर सोने, चाँदी एवं ताँबे के सिक्के प्रचलित किये। उसने 1577 ई0 में मुद्रा में सुधार करने उनमें कलात्मक रूप देने के लिए ख्वाज़ा अब्दुसमद को टकसाल का निदेशक नियुक्त किया और फतेहपुर सीकरी की टकसाल का अधिकारी बनाया। इसके अतिरिक्त टकसाल की समुचित व्यवस्था के लिए दरबार के विल विशेषज्ञों को इससे सम्बन्धित भी कर दिया। इस प्रक्रिया में सम्राट ने मुजफ्फर खाँ को लाहौर की टकसाल, टोडरमल को बंगाल की टकसाल और ख्वाजाशाह मंसूर को जौनपुर की टकसाल की देखभाल का कार्य दिया।

ख्वाजा अबुसमद ने सोने, चाँदी और ताँबे के अनेक प्रकार के और अनेक तौलों के सिक्के चलाये। शासन के प्रारम्भ में अकबर ने 'मुहर' नामक एक सिक्का चलाया। 'आईन–ए–अकबरी' से ज्ञात होता है कि उसने (अकबर) ने 26 सोने, 9 चाँदी तथा 4 ताँबे के सिक्के चलाये। परन्तु इनमें से कई सिक्के अभी तक नहीं मिल पाये हैं।[अ] अकबर ने 'रुपया' नाम से चाँदी का सिक्का चलाया, जिसका वजन 178 ग्रेन था। डॉ0 आशीर्वादीलाल श्रीवास्तव के अनुसार चाँदी का मुख्य सिक्का रुपया था जो तौल में 72.5 ग्रेन था।[अप] इसके अतिरिक्त 'जलाला' (चौकोर रुपये के मूल्य का), दरब (आधा रुपया), चर्न (चौथाई रुपया), पनडाऊ (रुपये का पाँचवा भाग), अष्ठा (रुपये का आठवा भाग), दश (रुपये कर दसवाँ भाग), काला (रुपये का सोलहवाँ भाग), सूकी (रुपये का बीसवाँ भाग) नामक सिक्के भी प्रचलित किये गये।

अकबर की ताँबे की प्रधान मुद्रा दाम थी जिसे पैसा या फुलूस भी कहा जाता था। इसकी तौल 323.5 ग्रेन (1 तोला 8 मासा 7 सुर्ख) होती थी। चालीस दाम का एक रुपया होता था। ताँबे के सिक्के में अधेला (आधा दाम), पावला (चौथाई दाम) और दमड़ी (दमड़ी का आठवाँ भाग) नाम से भी सिक्के निकाले गये। दाम को पचीस भागों में विभक्त किया जाता था, इसे जीतल कहते थे। अकबर के सिक्के (रुपये) गोल और चौकोर बने हैं। सर्वप्रथम उसके सिक्कों पर बादशाह अकबर का नाम उसकी पदवियाँ, टकसाल का नाम तथा साम्राज्य अक्षय रहे अंकित था। बाद में उसके सिक्कों पर 'अल्ला हू अकबर, जल्ले जलाल हू' अंकित कराया गया।[अपप]

अपने शासन के 40वें वर्ष कुछ श्रेणी के सिक्कों पर अकबर ने पद्यात्मक आख्यान अंकित कराया जिसे कुछ कारणों से बन्द कर दिया गया। कुछ दिनों के पश्चात् इसे पुनः प्रचलित किया गया। अकबर ने असीरगढ़ दुर्ग विजय की स्मृति में एक सोने का सिक्का चलाया जिसमें एक ओर बाज, दूसरी ओर टकसाल का नाम तथा ढालने की तिथि मुद्रित करायी। सम्भवतः कुछ चाँदी के सिक्के भी इस अवसर पर प्रचलित किये गये, जिसमें अकबर एक बाज के साथ घोड़े पर सवार प्रदर्शित किया गया है। अकबर के शासन के 50वें वर्ष

कुछ ऐसे भी सिक्के निकाले गये, जिस पर राम और सीता की मूर्ति है तथा नागरी लिपि में 'राम–सिया' लिखा हुआ है।[अपपप] डॉ0 परमेश्वरी लाल गुप्ता ने लिखा है कि आगरे से एक अन्य सिक्का चलाया गया जिसकी एक तरफ बत्तख अंकित है।[पग] अकबर के सोने के सिक्के ढालने के चार सीमित स्थान कर दिये गये थे। फतेहपुर सीकरी, राजमहल (बंगाल), अहमदाबाद और काबुल। इसी प्रकार रजत (चाँदी) के सिक्के 14 स्थानों पर ढाले जाते थे। जाली सिक्के बनाने के लिए कड़ा नियम अकबर को बनाने पड़े थे। टकसाल के प्रमुख अधिकारी दरोगा तथा सराफी थे। सराफी को सिक्के शुद्ध धातु के और उनमें मिलावट न हो का उत्तरदायित्व दिया गया था। अकबर के सिक्के शुद्धता तथा कलात्मक दृष्टि से उल्लेखनीय हैं। अबुल फज़ल लिखता है कि 'अब सिक्के राजकोष के आभूषण बन गये हैं और लोग उन्हें पसन्द करते हैं। बी0ए0 स्मिथ ने लिखा है कि अकबर के कई सिक्कों में तो माना जाता है कि खरा सोना ही सोना है।''[ग]

जहाँगीर के काल के सिक्के भी अकबर के काल के सिक्कों के आधार पर हैं। जहाँगीर पहला सम्राट था जिसने सिक्कों पर अपनी मूर्ति खुदवायी और उसके एक सिक्के पर तो सीधे हाथ में शराब का प्याला लेते हुए उसकी मूर्ति अंकित है।[गप] उसके कुछ सिक्कों पर उसकी अर्ध प्रतिमा का पार्श्व चित्र, एक हाथ बालफनी पर रखे हुए अंकित है। उसने निसार (एक रुपये का चौथाई) नाम का सिक्का चलाया, जो पहले भी उसके उत्तराधिकारियों के समय में भी चलता रहा। इसके अतिरिक्त उसने 'नरअपशाँ' तथा 'खैर काबुल' नामक सिक्के भी प्रचलित किये। सिंहासन पर आसीन होने के बाद जहाँगीर की आज्ञा से सोने और चाँदी के सिक्कों के भार में 20 प्रतिशत की वृद्धि कर दी गयी। सोने के सिक्के 202 ग्रेन के और चाँदी के 212 ग्रेन के सिक्के निर्मित किये गये। चार वर्ष होने पर सिक्कों का वजन 5 प्रतिशत पुनः बढ़ाया गया और इस प्रकार सोने के 212 ग्रेन के सिक्के और चाँदी के 222 ग्रेन के सिक्के निकाले गये। छठें वर्ष के शासन के अवसर पर सिक्कों के वजन पर प्रतिरोध होने से उसे फिर अकबर के समय के तौल के सिक्के चलाये गये। जहाँगीर ने पद्यात्मक आख्यान भी अपने सिक्कों पर उत्कीर्ण कराये। सिंहासनारोहण के उपरान्त एक सोने की मुहर चलायी गयी, जिस पर अकबर का चित्र अंकित था। जहाँगीर के एक सिक्के पर राशि चक्र भी मिलता है।

शाहजहाँ ने भी जहाँगीर की भाँति अकबर की मुद्रा–प्रणाली को जारी रखा, किन्तु दोनों ने सिक्कों पर अपना नाम अवश्य खुदवाया। औरंगजेब के शासन काल में इसमें थोड़ा सा परिवर्तन हुआ और रुपये में 5/8 प्रतिशत वृद्धि कर दी गयी। मुगल साम्राज्य के पतन तक यह प्रणाली जारी रही। शाहजहाँ के सिक्कों पर भी पद्यात्मक आख्यान अंकित हैं।

औरंगजेब ने सिंहासनारोहण होने के बाद सिक्कों पर कलमा अंकित होने की प्रथा को बन्द करा दिया और इसके बाद मुगल सिक्कों पर कलमा अंकित नहीं किया गया। औरंगजेब के सिक्कों पर उसका नाम और पदवी इस प्रकार खुदा हुआ है – ''अबू अल जफर मुहीउद्दीन मुहम्मद बहादुरशाह आलमगीर औरंगजेब बादशाह गाजी।'' इसके बाद के सिक्कों पर मीर अब्दुल बाकी शाहबाई द्वारा रचित एक पद्य अंकित कराया गया।

सिक्कों के लिए सोना–चाँदी अधिकांशतः विदेशों से मंगवाया जाता था और अधिकांश भाग पूर्वी अफ्रीका से आता था। कोई भी व्यक्ति सोना–चाँदी का देश से निर्यात नहीं कर सकता था। विदेशों से जो सोना–चाँदी आता था, वह सिक्कों के ढालने, गहने बनाने तथा ख़जाने में जमा करने के काम में आता था। राजपूताना, मध्य भारत तथा हिमालय पर्वतमाला में ताँबा अधिक पाया जाता था। मुगलकाल में टकसालें केन्द्रीय नियंत्रण के अन्तर्गत होते हुए भी ढलाई के क्षेत्र में इस हद तक स्वतन्त्र थी कि कोई भी व्यक्ति वहाँ चाँदी ले जाकर सिक्के ढलवा सकता था। सिक्के ढलवाने का शुल्क ढाले हुए सिक्कों का लगभग 5–6 प्रतिशत होता था। सोने तथा ताँबे के सिक्के ढलवाने के सम्बन्ध में भी यही कानून लागू होते थे।[गपप] अतः स्पष्ट है कि सोने के सिक्के शुद्ध सोने के थे। चाँदी के सिक्कों में चार प्रतिशत से अधिक की मिलावट नहीं होती थी। सोने, चाँदी तथ अन्य धातुओं के विनिमय का भाव बाजार के द्वारा नियंत्रित होता रहता था। शासन का इसमें हस्तक्षेप नहीं था।

मुगलकाल में टकसाल देश के भिन्न–भिन्न भागों में थीं। प्रमुख टकसालें – आगरा, फतेहपुर सीकरी, राजमहल (बंगाल), अहमदाबाद, इलाहाबाद, दिल्ली, काबुल, पटना, लाहौर, मुल्तान और कश्मीर में भी थीं। सोने का सबसे प्रचलित सिक्का मुहर था। आईन के अनुसार – एक मुहर नौ रुपये के बराबर थी। हाकिंस (1608–1612) में लिखता है कि एक अशरफी दस रुपये के बराबर थी। उसका मूल्य 1614 ई0 में 10.7 रुपये के बराबर था। सोने की एक मुहर में 1620 ई0 में 14 रुपये मिल सकते थे। मुहर का भाव गिरकर 1676 ई0 में 12 और 11 रुपये के बराबर हो गया था। एक मुहर 1695 ई0 में 13¼ रुपये के बराबर था।[गपपप] एक दाम का वजन एक तोला आठ माशा और सात सुर्ख (323 ग्रेन) था। ताँबे का मूल्य घटता–बढ़ता रहता था और उसी के आधार पर दाम और रुपये का भी मूल्य नियंत्रित होता था। जहाँगीर के समय ताँबे का मूल्य अधिक परिवर्तित नहीं हुआ। इस कारण लगभग 40 दाम एक रुपये के बराबर था। दूरवर्ती प्रदेश में चाँदी की उपलब्धि के हिसाब से इनमें परिवर्तन होता रहता था। गुजरात में 1636 ई0 में 26 या 27 दाम का एक रुपया था। जनवरी 1627 ई0 में आगरा में 25 दाम का एक रुपया, 1640 ई0 में बंगाल में 28 दाम का एक रुपया, 1661 ई0 में आलमगीरी रुपये का मूल्य औरंगाबाद में लगभग 15 दाम था। इस तरह दाम का मूल्य परिवर्तित होता रहता था।[गपअ]

मुगलकाल में धन पर आधारित मुद्रा–प्रणाली काफी प्रगति कर चुकी थी। मुगल भारत में एक ऐसी अर्थव्यवस्था का विकास हुआ था जो मुद्रा पर आधारित थी, जिसमें हुण्डी, बीमा, बैंकिंग आदि सभी विकसित वाणिज्य–पद्धतियाँ विद्यमान थीं। इस मुद्रा–प्रणाली की प्रशंसा न केवल भारतीय इतिहासकारों ने अपितु यूरोपीय इतिहासकारों ने भी की है। यह मुद्रा–प्रणाली आगे चलकर ब्रिटिश मुद्रा–प्रणाली का आधार बनी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

प डॉ0 एच0एस0 श्रीवास्तव : मुगल शासन प्रणाली, (संस्करण 1989), पृ0 169

पप डॉ0 लईक अहमद : मुगलकालीन भारत, पृ0 53

पपप सी0जे0 ब्राउन : दि क्वायन्स ऑफ इण्डिया, (संस्करण 1922), पृ0 90

पअ डॉ0 के0आर0 कानूनगो : शेरशाह, पृ0 383

अ आईन–ए–अकबरी : ब्लाखमैन भाग–1, पृ0 27–32

अप मुगलकालीन भारत, पृ0 456; अकबर की मुद्रा प्रणाली का आधार रुपया था जिसका वजन 1/8 भरी (डेढ़ रत्ती का वजन) था – द्रष्टव्य; हरिश्चन्द्र वर्मा; मध्यकालीन भारत, भाग–2, पृ0 407

अपप डॉ0 एच0एस0 श्रीवास्तव : मुगल शासन प्रणाली, पृ0 170

अपपप पूर्वोक्त, पृ0 170

पग सी0जे0 ब्राउन : दि क्वायन्स ऑफ इण्डिया, (संस्करण 1968), पृ0 118–19

ग ए0एल0 श्रीवास्तव : अकबर दि ग्रेट मुगल, (संस्करण 1919), पृ0 157

गप आशीर्वादी लाल श्रीवास्तव : मुगलकालीन भारत, पृ0 456

गपप हरिश्चन्द्र वर्मा : मुगलकालीन भारत, भाग–2, पृ0 408

गपपप आईन–ए–अकबरी, जैरेट अनुवाद, भाग–2, पृ0 25; डॉ0 इरफान हबीब : दि एग्रेरियन सिस्टम ऑफ मुगल इण्डिया, (संस्करण 1963), पृ0 384–87

गपअ आईन–ए–अकबरी, जैरेट अनु0, पृ0 31